

# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

भागवत की आरती



श्रीमद् भागवत का यह सार  
भगवद् भक्ति ही आधार

## प्रार्थना

नारायणं(न) नमस्कृत्य, नरं(ज) चैव नरोत्तमम्।  
देवीं(म) सरस्वतीं(म) व्यासं(न), ततो जयमुदीरयेत् ॥ (1.2.4)

नामसङ्कीर्तनं(म) यस्य, सर्वपापप्रणाशनम्।  
प्रणामो दुःखशमनस्, तं(न) नमामि हरिं(म) परम् ॥ (12.13.23)

## मंगलाचरण

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराद्  
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।  
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा  
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥ 1 ॥ (1.1.1)

धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सतां  
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तापत्रयोन्मूलनम्।  
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः  
सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ॥ 2 ॥ (1.1.2)

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं  
शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।  
पिबत भागवतं रसमालयं  
मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥ 3 ॥ (1.1.3)

## चतुःश्लोकी भागवतम्

भगवानुवाच

अहमेवासमेवाग्रे, नान्यद् यत् सदसत् परम्।

पश्चादहं(म्) यदेतच्च, योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥ 1 ॥ (2.9.32)

ऋतेऽर्थं(म्) यत् प्रतीयेत, न प्रतीयेत चात्मनि।

तद्विद्यादात्मनो मायां(म्), यथाऽऽभासो यथा तमः ॥ 2 ॥ (2.9.33)

यथा महान्ति भूतानि, भूतेषूच्चावचेष्वनु।

प्रविष्टान्यप्रविष्टानि, तथा तेषु न तेष्वहम् ॥ 3 ॥ (2.9.34)

एतावदेव जिज्ञास्यं(न्)- तत्त्व जिज्ञासुनाऽऽत्मनः।

अन्वयव्यतिरेकाभ्यां(म्), यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥ 4 ॥ (2.9.35)



## भागवत की आरती

आरती अतिपावन पुराण की।  
धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

महापुराण भागवत निर्मल,  
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल,  
परमानन्द-सुधा रसमय कल,  
लीला रति रस रसनिधान की,  
आरती.....

कलिमल मथनि त्रिताप निवारिणी,  
जन्म मृत्युमय भव भयहारिणी,  
सेवत सतत सकल सुखकारिणी,  
सुमहौषधि हरि चरित गान की,  
आरती.....

विषय विलास विमोह विनाशिनी,  
विमल विराग विवेक विकासिनी,  
भागवत् तत्व रहस्य प्रकाशिनी,  
परम ज्योति परमात्मज्ञान की,  
आरती.....

परमहंस मुनि मन उल्लासिनी,  
रसिक हृदय रस रास विलासिनी,  
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनी,  
कथा अकिंचन प्रिय सुजान की,  
आरती.....

## समर्पण प्रार्थना

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।  
तेन त्वदंग्रिकमले रतिं मे यच्छ शाश्वतीम् ॥

हे गोविंद आप की वस्तु आपको ही समर्पण कर रहा हूँ इसके द्वारा आपके चरण कमलों में मुझे शाश्वत प्रेम प्रदान करने की कृपा करें ॥

## समापन प्रार्थना

ॐ पूर्णमदः(फ़) पूर्णमिदं(म) पूर्णात्पूर्णमुदच्यते  
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥  
ॐ शान्तिः(श)शान्तिः(श)शान्तिः ॥